RNI NO. : MPHIN33094 वर्ष- 13 वां अंक 49

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

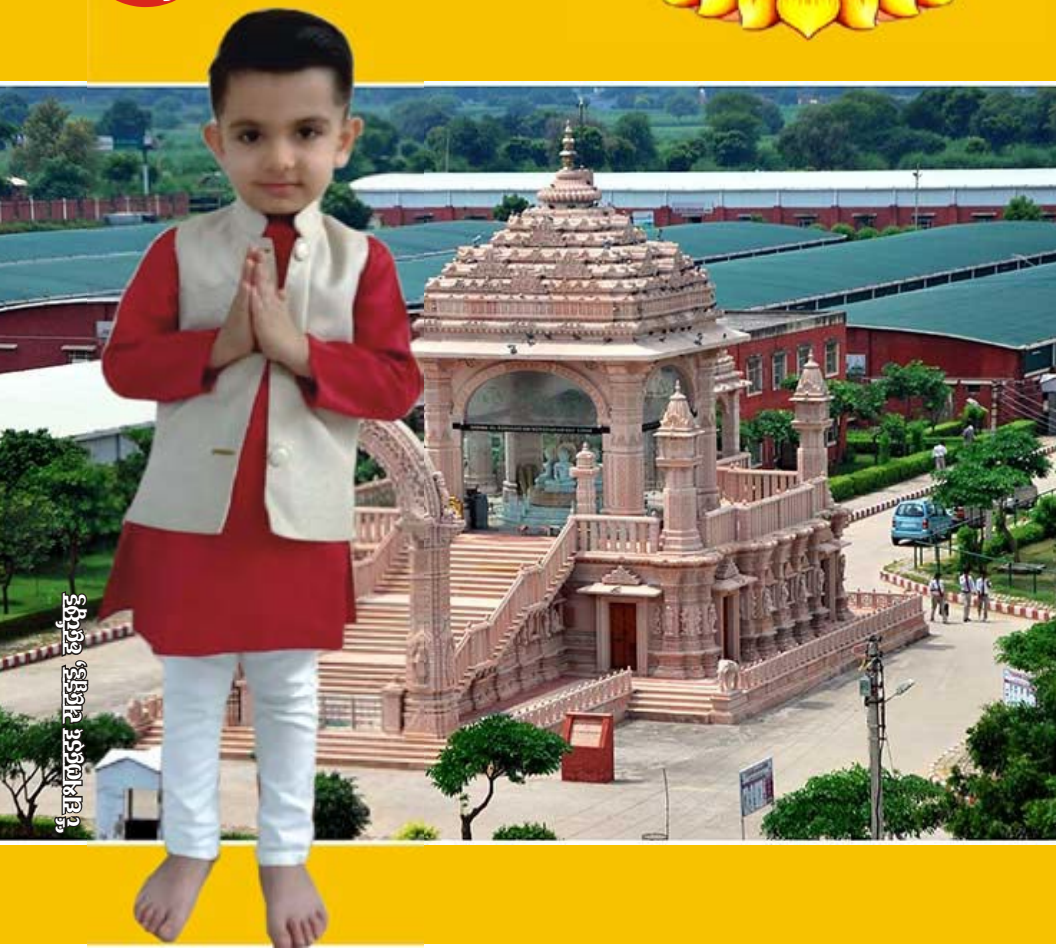

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

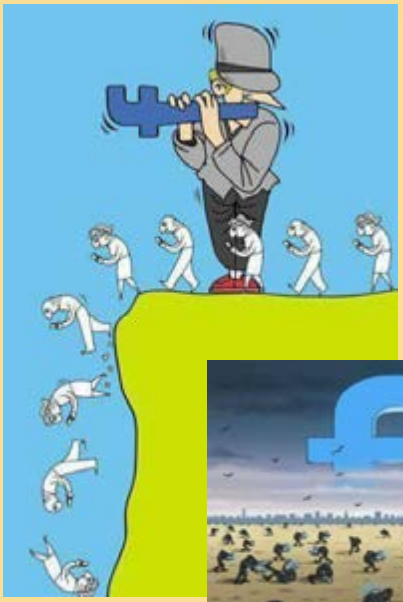

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्ज्वला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन दिल्ली, श्री विवेक जैन बहरीन

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज (उ.प्र.)

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2–3
3.	इस अपराध का जिम्मेदार कौन...	4
4.	अब नहीं नहाऊँगा	5 (शेष भाग पेज 7 पर)
5.	अष्ट मंगल द्रव्य	6–7
6.	कुलचुरी नरेश और जैन धर्म	8
7.	श्रीवत्स का अर्थ	9
8.	भारतीय संस्कृति के विश्वदूत	10–11
9.	विक्रमजी सारा भाई	12
10.	श्रेष्ठ नारी–मन्दोदरी	13–14
11.	करनी का फल	15
12.	कैलेन्डर 2019	16–17
13.	मायाचार का दुष्परिणाम	18
14.	गर्व किस पर	19
15.	अच्छा मौसम	20
16.	आगे की यात्रा	21
17.	संस्कारों का पतन	22
18.	जियो ने मरने की व्यवस्था कर दी	23–24
19.	आपके प्रश्न – आगम के उत्तर	25
20.	समाचार	26–28
21.	कवितायें	29
22.	कहानी वीरांगना –	30–31
23	जन्म दिवस	32

सदस्यता शुल्क -500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

वेलेन्टाइन डे की फूहड़ता और अनैतिक होते युवा

प्रतिवर्ष 14 फरवरी को मनाया जाने वाला कठित प्रेम पर्व वेलेन्टाईन डे अनैतिकता, कुशील और फूहड़ता का प्रतीक बनता जा रहा है। विशुद्ध पश्चिमी संस्कृति से आयात किया हुआ यह कुशील पर्व हमारी संस्कृति और सभ्यता पर भयंकर कुठाराघात कर रहा है। इस दिन के प्रारंभ के बारे में विदेशों की लगभग 32 घटनाओं का उल्लेख मिलता है। तीसरी शताब्दी से प्रारंभ इस पर्व को शहीदों, पुरानी मान्यताओं, प्रकृति के परिवर्तन आदि से जोड़ा जाता रहा है। परन्तु इस दिन को विशेष महत्व मिलता है संत वेलेन्टाईन की घटना से। रोम में तीसरी शताब्दी में सम्राट क्लॉडियस ने अपने राज्य में शादी करने पर प्रतिबंध लगा दिया तो एक चर्च के पादरी संत वेलेन्टाईन ने इसका बहुत विरोध किया और अनेक सरकारी अधिकारियों का चुपचाप विवाह करवाया। इससे नाराज होकर सम्राट ने उसे फांसी देकर मरवा दिया बस उसी की याद में वेलेन्टाईन डे की शुरुआत हो गई। इसी तरह की दो-तीन कहानियाँ और भी मिलतीं हैं।1990 तक इसका प्रभाव भारत में नहीं था परन्तु इसके बाद विदेशी कम्पनियों ने अपने फायदे के लिये धीरे-धीरे इसका प्रभाव बढ़ाना शुरु किया और आज यह पूरे देश में प्रेमियों का महापर्व बन गया है। एक अनुमान के अनुसार इस दिन के लिये हमारे देश में लगभग 250 करोड़ रुपये के ग्रीटिंग, टेडी बियर, चॉकलेट गुलाब के फूल, उपहार आदि का व्यापार होता है। इस दिन हर कीमत पर प्रेमी और प्रेमिका मिलना चाहते हैं। वे घर से बहाना बनाकर, झूठ बोलकर अपने माता-पिता से विश्वासघात करके भी अपने फूहड़ प्रेम को जीवंत रखना चाहते हैं। आज के प्रेम में प्रेम कम, वासना अधिक है। प्रेम करना कोई अपराध नहीं है परन्तु प्रेम की मर्यादायें होना चाहिये। 20-25 वर्ष तक पालन-पोषण कर हर इच्छा को पूरा करने वाले माता-पिता के त्याग और समर्पण को कैसे भूला जा सकता है? लेकिन आश्चर्य यह है कि सीता, अनंगसरा, महावीर, बुद्ध, विवेकानन्द के देश में बिना शादी के रहना अधिकार और आदर्श समझा जाने लगा है। अपनी अनैतिकता को सिद्ध करने के लिये उन्हें कृष्ण और राधा के प्रेम झूठे तर्क तो याद आते हैं परन्तु न्याय-नीति और देशभक्ति के लिये महात्मा गांधी, भगत सिंह, लालबहादुर शास्त्री याद नहीं आते। उन्हें रानी पदमावती का जौहर, सीता की अग्नि परीक्षा, अंजना का वियोग और धीरता, चन्दनबाला का संघर्ष और उसका अटूट शील याद नहीं आता। हम कैसे भूल गये कि बन्धुश्री और उसके परिवार ने विधर्मी

राजा से विवाह से बचने के लिये अरबों रुपये की संपत्ति त्यागकर राज्य छोड़ दिया था ?

आज के युवाओं को 10-12 प्रेम सम्बन्धों को रखकर छोड़ने और अनैतिक सम्बन्धों रखने और फिर अपने विवाह को राष्ट्रीय महोत्सव सिद्ध करने वाले फिल्मी दुनिया के एक्टर-एक्ट्रेस तो याद आते हैं, अपनी उम्र से कई वर्ष बड़े व्यक्ति से विवाह को विशुद्ध प्रेम का नाम देने वाले तो आदर्श लगते हैं परन्तु अपने शील की रक्षा में अपने प्राण तक कुर्बान करने वाली देश की महान नारियाँ याद नहीं आतीं। एक ओर देश का सबसे धनी अम्बानी परिवार अपने बेटी के विवाह में परम्पराओं और मर्यादाओं का आदर्श स्थापित करता है तो दूसरी तरफ कुछ वर्षों के वासनामयी नकली सुख के लिये विजातीय प्रेम विवाह करने को जायज सिद्ध करने की होड़ लगी है। प्रेम के अंधेपन में इन्हें परिवार की सामाजिक इज्जत, न कुल की मर्यादा की कोई परवाह नहीं होती। ये नहीं समझते कि हमारे इस कदम से माता-पिता और पूरे परिवार को जीवन भर कलंक लेकर जीना पड़ेगा। अभी पिछले माह ही हैदराबाद के प्रतिष्ठित जैन व्यापारी ने अपनी बेटी के दूसरे धर्म में विवाह करने से दुःखी होकर ट्रेन के सामने कटकर जान दे दी। बेटे भी बड़े होकर अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लगे हैं। महानगरों में छठवीं-सातवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों में भी गर्लफ्रेन्ड-बॉयफ्रेन्ड का खतरनाक खेल खेला जा रहा है। लव मैरिज करने वाले कपल्स की प्यार की पूरी कहानी का वीडियो बनाकर संगीत संध्या में दिखाया जाना, प्री वैडिंग शूटिंग करवाना बेशर्मी की पराकाष्ठा है। इससे हमारे परिवार के बच्चे किस प्रकार संस्कारित होंगे आप स्वयं सोच सकते हैं ..

इसमें दोष किसी का भी हो परन्तु माता-पिता भी अपनी भूमिका से इंकार नहीं कर सकते। अपने बच्चों को भौतिक सुविधाओं देने के साथ उन पर कड़ी निगाह भी रखना होगी, उनकी शिक्षा के साथ उनकी संगति पर भी ध्यान रखना होगा, समय रहते उन्हें इन बुराईयों के दुष्परिणाम बताने होंगे और सबसे बड़ी बात कुछ वर्षों के नकली सुख के लिये आगामी भवों के भयंकर दुःखों को और मोक्षमार्ग की आधारशिला के लिये शील और सदाचार के संस्कार भी समझाने होंगे। एक बार विधर्मी से विवाह करने का मतलब है असंख्य भवों तक जिनधर्म नहीं मिलने की पूरी तैयारी।

हमारे प्रयासों के बाद फिर कुछ भी हो, लेकिन माता-पिता किसी भी परिस्थिति में उनके अनैतिक कार्य को सामाजिक और पारिवारिक मान्यता न दें - जिससे सामाजिक सुरक्षा और मर्यादायें बनी रह सकें। हमें अपने गौरवशाली इतिहास की रक्षा हर हाल में करना होगी चाहे इसके लिये हमें अपने संतान मोह का बलिदान देना पड़े, वरना गौरवशाली परम्पराओं और महान सतियों के धर्म में कलंक लगाने पर इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा....।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

इस अपराध का जिम्मेदार कौन ?

पूर्व के बाहुबली

हमने चहकती चेतना के पिछले अंक में श्रवणबेलगोला के गोम्मटेश्वर बाहुबली के प्रति चिन्ता का व्यक्त की थी। विगत 15 सितम्बर को मस्तकाभिषेक संपन्न हो गया। उसके बाद प्रतिमा की सफाई का कार्य प्रारम्भ हुआ । वर्तमान में प्राप्त चित्रों ओर समाचारों के अनुसार लगातार 6 माह 28 दिन तक हुये पंचामृत आदि अभिषेक के कारण विश्व की ऐतिहासिक धरोहर भगवान बाहुबली की प्रतिमा का रंग ही बदल गया है।

1. प्रतिमा के चरण में छोटे-छोटे गड्ढे हो गये हैं और अनेक जगह से पत्थर की परतें निकल रहीं हैं।

2. दाहिने पैर के पास 7 फुट लम्बी दरार पड़ गई है।
3. बारिश के मौसम में पंचामृत द्रव्यों के कारण हरे रंग की काई जम गई थी। जिसे अनेक बार पानी से साफ करने का प्रयास किया गया परन्तु पूरी तरह साफ नहीं हो पाई।
4. पदाधिकारियों से पूछने पर बताया गया कि सफाई करने का कार्य पुरातत्व विभाग (Archeological Survey of India) का कार्य है। क्या पुरातत्व विभाग वाले महान प्रतिमा की विनय रख कर सफाई कर पायेंगे? शायद उनके लिये यह असंभव होगा।

इस महान प्रतिमा की अविनय के घोर अपराध का जिम्मेदार कौन ? क्या इस पाप के जिम्मेदार अपने पापों का प्रायश्चित करेंगे .....?

अब नहीं नहाऊँगा

चिन्मय! घर तो बहुत सुन्दर बनाया है।

थैंक्स अंकल ! बस आपका ही आशीर्वाद है। आप जल्दी से नहा लीजिये। जिनमंदिर पास में ही है।

श्रीजी के अभिषेक का समय हो रहा है। हम साथ में चलकर अभिषेक पूजन करेंगे।

वाह! ये तो बहुत अच्छी बात है कि मंदिर पास में है। मैं अभी नहाकर आता हूँ।

और अंकल ठंड बहुत है। बाथरुम के गीजर में पानी गरम हो गया है, आप उससे ही नहाईयेगा।

चिन्मय! क्या तुम गीजर से पानी गरम करते हो..

हाँ अंकल। जब घर बनवाया था तब ही गीजर फिट करवा दिया था।

लेकिन चिन्मय! गीजर से पानी गरम करने पर तो बहुत जीवों की हिंसा होती है।

वो कैसे अंकल ?

अरे बेटा! गीजर में बिना छना पानी सीधे छत की टंकी से आता है और गरम होता है। अनछने पानी में तो असंख्यात जीवों की हिंसा हो जाती है।

अंकल! हम तो गृहस्थ हैं, इतनी हिंसा तो चलती है...

तुम गलत सोच रहे हो चिन्मय। हिंसा चाहे गृहस्थ करे या मुनिराज के निमित्त से हो, हिंसा तो हिंसा ही है और घर के कार्य में जिस हिंसा से बचना असंभव है उस हिंसा को आरंभी हिंसा कहते हैं। पर ये तो संकल्पी हिंसा है, जानते हुये हुये हिंसा कर रहे हो और संकल्पी हिंसा का तो महापाप लगता है।

ठीक है अंकल! मैं सोचूँगा। अभी मंदिर चलते हैं।

तुम बात को टालने का प्रयास कर रहे हो चिन्मय। जब जिनेन्द्र भगवान की बात ही नहीं मानना तो उनके अभिषेक और पूजन का क्या लाभ?

बात टालने की बात नहीं अंकल। गीजर में पानी गरम करने से सुविधा होती है

अष्ट मंगल द्रव्य

तीर्थंकर भगवान के समवशरण में जिस स्थान पर भगवान विराजमान होते हैं वहाँ दूसरी पीठ पर नौ निधियाँ, धूप, घट, ध्वजायें और अष्ट मंगल द्रव्य विराजमान होते हैं। अष्ट मंगल द्रव्यों के नाम तिलोयपण्णत्ति ग्रन्थ के अनुसार भृंगार (झारी), कलश, दर्पण, चंवर, बीजना, छत्र, स्वस्तिक और सुप्रतिष्ठ (ठोना) कहे गये हैं। कहीं-कहीं बीजना के स्थान पर स्वस्तिक का कथन मिलता है। ये सभी मंगल द्रव्य प्रत्येक जिनप्रतिमा के पास स्थापित होते हैं। समवशरण में ये 8 मंगल स्वरूप द्रव्य होते हैं। इन्हें अष्ट मंगल द्रव्य कहा जाता है।

महापुराण में झारी, कलश, दर्पण, शंख, घंटा, धूप, घट, दीप, कूर्च, झांझ, मंजीरा आदि 108 उपकरणों को मंगल द्रव्य बताया है।

1. भृंगार (झारी) -जैसे झारी में पानी बहुत भरा हो पर वह थोड़ा-थोड़ा ही बाहर निकलता है उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान केवलज्ञान अनंत ज्ञान के धनी होते हैं। पर उनकी वाणी में द्वादशांग का वर्णन एक साथ न होकर क्रमशः होता है।

2. कलश - अरहंत भगवान अनंत गुणों से पूरिपूर्ण हो गये हैं इसलिये लोक में भरे हुये कलश को मंगल माना जाता है।

3. दर्पण - जैसे दर्पण में दूर और पास के सभी पदार्थ स्पष्ट झलकते हैं, पर वे पदार्थ दर्पण में प्रवेश नहीं करते और दर्पण भी उन पदार्थों से अप्रभावित रहता है वैसे भगवान के केवलज्ञान रूपी दर्पण में विश्व के सभी पदार्थ स्पष्ट झलकते हैं। ज्ञान में पदार्थ प्रवेश नहीं करते और केवल ज्ञानी का ज्ञान सबको जानकर भी उनसे अप्रभावित रहता है।

4. चंवर - शत्रु समूह पर विजय प्राप्त करने वाले राजा के दोनों ओर चंवर ढुराये जाते हैं। चंवर ऐश्वर्य के प्रतीक हैं। इसी प्रकार अरहंत भगवान ने कर्म रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर तीन लोकों के स्वामी बने हैं, इसलिये उनके वैभव के दर्शाते हुये चंवर ढुराये जाते हैं।

5. बीजना (ध्वाज) -ध्वजा यश, कीर्ति, विजय का प्रतीक होने से मंगल कही जाती है।

6. छत्र - छत्र का अर्थ आश्रय है। जगत में सर्व जीवों को मोक्षमार्ग की शरण देने वाले अरहंत भगवान छत्र के समान हैं। जैसे छत्र से धूप, बरसात आदि का बचाव होता है उसी प्रकार अरहंत भगवान की शरण प्राप्त करने से संसार के दुःखों से बचकर मोक्ष सुख प्राप्त होता है। सिद्धशिला भी छत्र के आकार की है इसलिये छत्र को मंगल कहा गया है।

7. - स्वस्तिक - स्वस्तिक चार गति के नाशक और मोक्ष सुख दर्शाने वाला मंगल चिन्ह है। इसलिये इसे मंगल माना गया है।

8. सुप्रतिष्ठ सु अर्थात् अच्छी तरह से, प्रतिष्ठ अर्थात् लीन होना, विराजमान होना। अरहंत प्रभु अपनी आत्मा में अच्छी तरह से स्थापित हैं, अनंत काल के लिये आत्मा में लीन हो गये हैं। समवशरण में अरहंत प्रभु कमलासन से चार अंगुल ऊपर विराजमान रहते हैं। इसके प्रतीक के रूप में सुप्रतिष्ठ को मंगल द्रव्य माना गया है।

अब नहीं नहाऊँगा का शेष भाग....

और करंट का भी डर नहीं रहता।

मात्र अपनी छोटीसी सुविधा के लिये असंख्यात जीवों की हिंसा करना सही है क्या ? चिन्मय! अब तो बहुत सारे उपाय हैं जिससे पानी भी गरम हो जायेगा और करंट का डर भी नहीं है। पर पानी तो छानकर ही गरम करना चाहिये। हमारा जैनधर्म अहिंसा प्रधान है। हम दिन भर हिंसा से बच नहीं पाते, पर इस गीजर की हिंसा से से तो बच सकते हैं। वरना हम जैन कैसे.....?

अंकल! आपकी बात तो सही है।

चिन्मय! हमारे गृहस्थ जीवन में हम जितना हिंसा से बच सकें उतना प्रयास करना चाहिये। यही सही नीति है।

ठीक है अंकल! मैं आज ही मैकेनिक को बुलाकर गीजर निकलवा देता हूँ। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी और कल से पानी छानकर ही गरम करूँगा।

ये हुई ना बात। बोलो अहिंसामयी जैन धर्म की जय।

जैन धर्म का इतिहास -

कलचुरी नरेश और जैन धर्म

भारतवर्ष के इतिहास में कलचुरी नरेशों का काल अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सन् 550 से 1740 तक भारत के उत्तर और दक्षिण के किसी न प्रान्त पर शासन किया है। इनके अनेक वंशज शिव को मानने वाले थे परन्तु उन्होंने जैन धर्म का भी बहुत प्रचार-प्रसार किया। ब्र. शीतलप्रसाद जी के अनुसार **कलचुरी** शब्द जैनत्व का परिचायक है। कलचुरी नरेश दिगम्बर मुनि पद धारण करते थे और कर्मों की निर्जरा करने के लिये साधना करते थे। कल का अर्थ है शरीर और चूरि का अर्थ चूर-चूर करना अर्थात् शरीर के प्रति मोह परिणाम को चूर-चूर करना। कलचुरी वंश के प्रथम सम्राट कीर्तिवीर्य ने मुनि पद धारण कर आत्मसाधना की थी।

प्रोफेसर रामस्वामी एयंगार ने वेल्विकुडी के ताम्रपत्र और तमिल ग्रन्थ पेरियपुराणम् से यह सिद्ध किया है कि कलचुरी वंश के राजा जैन धर्म के पक्के अनुयायी थे। इनके तमिल प्रान्त में पहुँचने पर जैन धर्म की वहाँ बहुत उन्नति और प्रचार हुआ था। कलचुरी सम्राट साहु सर्वहार के पुत्र महाभोज ने मध्यप्रदेश के बहोरीबन्द में विशाल शांतिनाथ मंदिर बनवाया, इसके साथ ही त्रिपुरी में भगवान ऋषभनाथ की, हनुमानताल जबलपुर के जैन मंदिर में भगवान ऋषभनाथ की भव्य प्रतिमा, पटना और सोहागपुर में प्राप्त अनेक प्रतिमायें जैन धर्म के प्रभाव को सिद्ध करती हैं। ये सभी प्रतिमायें कलचुरी राजाओं ने स्थापित करवाईं।

सन् 1200 में कलचुरी राजमंत्री रेचम्य ने श्रवणबेलगोला में भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई। बाद में विज्जल राजा के समय में जैन धर्म का प्रभाव कम हो गया। शैव धर्म के प्रचार हेतु चमत्कारों का सहारा लिया गया। उस समय अबलूर जैन धर्म के प्रचार का प्रमुख केन्द्र था। उस समय के राजा रामय्य ने जैनियों को बहुत सताया और अनेक जैन प्रतिमाओं को तोड़ दिया। सोमनाथ मंदिर में जैनियों पर अत्याचार के चित्र उत्कीर्ण हैं।

विज्जल का मंत्री वसव जैन धर्म अनुयायी था। उसने अपने पद का प्रयोग कर जैन धर्म के उत्थान के लिये बहुत धन दिया। तब विज्जल राजा इससे नाराज हो गया तो वसव को राजा के नाराज होने की जानकारी मिली तो वह राज्य से भाग गया तो विज्जल ने वसव के सहयोगी हल्लेइज और मधुवेय्य की आंखें निकलवा लीं। बाद में वसव में जगदेव नाम के व्यक्ति को भेजकर विज्जल राजा की हत्या करवा दी।

गयकर्ण राजा के समय में भगवान शांतिनाथ के स्तम्भ निर्माण का उल्लेख है। इन सब अनेक कारणों से कलचुरी नरेशों का जैन धर्म के प्रचार में बहुत योगदान रहा।

श्रीवत्स का अर्थ

आपने जिनमंदिर में विराजमान जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा देखी होंगी। इन प्रतिमाओं में अधिकांश प्रतिमायें तीर्थंकरों की होतीं हैं । जैसे - भगवान आदिनाथ, शांतिनाथ, महावीर आदि। कुछ प्रतिमायें भगवान की होती हैं। जैसे - भरत, जम्बूस्वामी आदि। तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के हृदय पर फूल के आकार का एक चिन्ह होता है इसे श्रीवत्स कहा जाता है। तीर्थंकर भगवन्तों को जन्म के समय से ही उनके शरीर पर 1008 शुभ चिन्ह होते हैं। उनकी छाती पर श्रीवत्स का चिन्ह होता है। श्री यानि लक्ष्मी और वत्स का अर्थ पुत्र होता है अर्थात् जिन्होंने अनंत दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य शक्ति इन अनंत चतुष्टय रूप अंतरंग लक्ष्मी को और समवशरण आदि बहिरंग लक्ष्मी को उत्पन्न किया है ऐसे वे तीर्थंकर परमात्मा होते हैं।

मैगी नूडल्स ने ली जान

क्या आप मैगी नूडल्स खाते हैं तो सावधान। अभी कुछ दिन पूर्व घटित एक घटना से पूरे देश में हलचल मच गई। राजस्थान के ब्यावर नगर के अत्यंत प्रतिष्ठित जैन परिवार के अदित डोसी की मैगी नूडल्स के कारण मौत हो गई। अदित अपने माता-पिता की इकलौती संतान था और चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट था।

9 नवम्बर 2018 को अदित मैगी खा रहा था। अचानक नूडल्स को वह निगल नहीं पाया और उसकी सांस रुकने लगी। उसने मैगी को बाहर उगलने का प्रयास भी किया परन्तु वह बाहर भी नहीं निकाल पाया। मैगी अदित के नाक और श्वांस नली में फंस गई। उसकी गम्भीर हालत देखकर उसे तत्काल हॉस्पिटल ले जाया गया। डॉक्टरों ने मैगी निकालने का बहुत प्रयास किया परन्तु वे असफल रहे और अंततः अदित की सांस रुकने से मृत्यु हो गई।

सोशल मीडिया में वायरल से खबर की सत्यता जानने के लिये चहकती चेतना टीम ने अदित के परिवार से सम्पर्क किया और इस समाचार को पूर्ण सत्य पाया।

चहकती चेतना परिवार दिवंगत अदित के चिरविराम की मंगल कामना करता है और आपसे निवेदन करता है कि थोड़े से जीभ के स्वाद के लिये महाअभक्ष्य मैगी का सेवन न करें ।

भारतीय संस्कृति के विश्वदूत - श्री वीरचन्द राघवजी गांधी

जैन समाज में समय-समय पर अनेक सन्त, विचारक, विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार, वैज्ञानिक, दानवीर, शासक आदि होते रहे हैं जिन्होंने विश्व को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया।

ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व थे - वीरचन्द राघवजी गांधी। 25 अगस्त 1864 में भावनगर के महुवा में जन्मे वीरचन्द बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। उनके पिता को पुत्र के जन्म के पूर्व एक स्वप्न आया कि घर के आंगन में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा गड़ी हुई है। स्वप्न सच हुआ और वीरचन्दजी के जन्म के दिन ही भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा आंगन खोदकर निकाली गई। वीरचन्दजी ने कानून की शिक्षा के साथ जैन दर्शन का गहरा अध्ययन किया और 14 भाषायें सीखीं।

सितम्बर 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद का आयोजन हुआ जिसमें दुनिया के अनेक धर्मों के 3000 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की थी। उसी धर्म संसद में स्वामी विवेकानन्द को उनके प्रभावशाली भाषण ने सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध कर दिया था। इसी धर्म संसद में वीरचन्दजी का भी जैन दर्शन और उसकी प्रभावी जीवन शैली विषय पर प्रभावशाली भाषण हुआ था। उस समय के वहाँ के अखबारों में वीरचन्दजी की प्रशंसा और उनके व्याख्यान के अंश भी प्रकाशित हुये थे। इस व्याख्यान से वे इतने प्रसिद्ध हो गये कि उन्हें और व्याख्यान देने के लिये अमेरिका में ही रुकने का निवेदन किया गया। वीरचन्दजी ने अमेरिका में प्राच्य विद्या और जैन विद्या नाम की दो संस्थायें स्थापित कीं। अमेरिका के अलावा उन्होंने यूरोपीय देशों में कुल 535 व्याख्यान दिये। उनके व्याख्यानों से प्रभावित होकर अनेक विदेशियों ने पूर्णतः शाकाहारी जीवन अपना लिया। शिकागो में आज भी वीरचन्दजी प्रतिमा लगी हुई है।

1896 में जब भारत में अकाल पड़ा तो वीरचन्दजी ने अमेरिका से चालीस हजार रुपये और एक जहाज भरकर अनाज भिजवाया। वीरचन्दजी जीव दया के प्रति बहुत जागरुक थे। जब उन्हें पता चला कि

सम्मेदशिखरजी में सुअर मारने के लिये कत्लखाना खोला जा रहा है तो उन्होंने अपने कानून के ज्ञान का उपयोग कर कत्लखाने की योजना बन्द करवा दी। जैन तीर्थ पालीताना में पहले जैन तीर्थ यात्रियों से टेक्स लिया जाता था। वीरचन्दजी ने बहुत संघर्ष कर उस टेक्स (Tax) को बन्द करवा दिया। 1890 में जब वीरचन्दजी के पिता का देहांत हुआ तो परिवार के लोग छाती पीटकर रोने लगे। उस समय यही परम्परा थी। वीरचन्दजी ने इस परम्परा को बन्द करवाया और शांति से देह संस्कार करने को कहा।

महात्मा गांधी वीरचन्दजी को अपने भाई जैसा मानते थे। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में वीरचन्दजी का उल्लेख बहुत गौरव के साथ किया है। वीरचन्दजी विवेकानन्दजी के भी परम मित्र थे। जब वे दोनों अमेरिका में थे तो विवेकानन्दजी ने जूनागढ़ के दीवान हरिदासजी को लिखे एक पत्र में लिखा - यहाँ आपके परिचित वीरचन्द गांधी हैं। ये इस भयंकर ठण्ड में भी फल-सब्जी के अतिरिक्त कुछ नहीं खाते। इनका रोम-रोम भारत की आजादी के लिये समर्पित है। अमेरिका की जनता इन्हें बहुत पंसद करती है। गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुये श्री नरेन्द्र मोदी ने एक बार वीरचन्दजी को याद करते हुये कहा था कि वीरचन्दजी बहुत बड़े विद्वान थे परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि 7 अगस्त 1901 में मात्र 37 वर्ष की आयु में वीरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया था। भारत सरकार ने श्री वीरचन्दजी के सम्मान में 8 नवम्बर 2009 को पाँच रुपये मूल्य का डाक टिकिट जारी किया था।

देश और जैन समाज के ऐसे महान सपूत को सादर नमन।

शब्द जो साकार हो गये : मातुश्री भूरी बाई जी का स्वर्गवास

31 दिसम्बर 2018 को जबलपुर निवासी श्रीमति भूरीबाईजी का अचानक स्वर्गवास हो गया। जीवन भर जिनशासन के सिद्धान्तों का अध्ययन, अनेक पूजन–भजन कंठस्थ, हमेशा शांत और प्रसन्न चित्त 90 वर्षीय मातुश्री का जीवन ही संस्कारों की पाठशाला था। उन्हें प्रतिदिन धार्मिक डायरी लिखने का शौक था। उन्होंने मृत्यु के आभास होते ही लिखा–

मैं कैसा मरना पसंद करना करूँगी

पहले तो ये विश्वास होना चाहिये कि मेरा जन्म–मरण नहीं होता। मैं तो अनादि–अनन्त अविनाशी आत्मा हूँ। मरना तो मात्र आत्मा का ट्रांसफर है। मेरी मृत्यु कब और कैसे होगी ये तो मुझे पता नहीं पर मैं समाधिमरण करना पसंद करूँगी। द्रव्य मरण में तो जीव का पुरुषार्थ नहीं चलता पर भाव मरण से बचना तो जीव के पुरुषार्थ में है। जीवन जो जाने वाला है उसको रखने की हम पूरी तैयारी करते हैं पर मृत्यु जो आने वाली है उसकी कोई तैयारी नहीं करता। मृत्यु तो अवश्य आयेगी फिर जो होना ही है उसको रोकने की आंकाक्षा व्यर्थ है। ज्ञानपूर्वक मरण कई जन्मों का मरण मिटा देता है। इसलिये ऐसा ही मरण मेरा होवे – ऐसी भावना है।

ध्यान रहे – मेरे मरने के बाद मेरे पार्थिव शरीर पर किसी प्रकार का सिन्दूर नहीं लगाया जाये, कंडे का प्रयोग नहीं किया जाये क्योंकि कंडे में अनन्त जीव राशि का घात होता है, अगरबत्ती का प्रयोग नहीं किया जाये, किसी प्रकार का आडम्बर नहीं किया जाये। मेरे पार्थिव शरीर के दाह संस्कार के लिये इस पर्याय के सम्बन्धियों की प्रतीक्षा नहीं की जाये। सभी पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते रहें। – भूरी बाई जैन

सुखद संयोग रहा है कि माताजी की भावना के अनुसार निर्देश पूर्वक मातुश्री के देहविलय के मात्र 90 मिनिट में देह संस्कार कर दिया गया।

विक्रमजी सारा भाई

मद्रास (चेन्नई) में समुद्र किनारे धोती कुर्ता पहने हुये एक सज्जन जिनवाणी पढ़ रहे थे। तभी वहाँ एक लड़का आया और उनसे पूछा कि आप क्या पढ़ रहे हैं? सज्जन ने विनम्रता से उत्तर दिया - जिनवाणी पढ़ रहा हूँ। वह लड़का हंसते हुये बोला - आज साइंस का जमाना है.. फिर भी आप लोग ऐसी पुस्तकें पढ़ते हैं। जमाना चांद पर पहुँच गया और आप लोग जैन धर्म की इन पुरानी बातों पर ही अटके हुये हो..।

सज्जन ने लड़के से पूछा - तुम जैन धर्म के बारे में क्या जानते हो?

लड़का जोश में आकर बोला - अरे! बकवास है ये सब जैन धर्म...। मैं विक्रम सारा भाई रिसर्च संस्थान का छात्र हूँ। **I am a Scientist...**

लड़के की बात सुनकर वह सज्जन मुस्कराने लगे। तभी बड़ी-बड़ी दो गाड़ियाँ वहाँ आईं ... एक गाड़ी में कुछ ब्लैक केट कमांडो निकले और एक गाड़ी से सैनिक। सैनिक ने कार का दरवाजा खोला तो वे सज्जन चुपचाप उस गाड़ी में जाकर बैठ गये। लड़का ये सब देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने दौड़कर पूछा - सर! आप कौन हैं?

वह सज्जन बोले - तुम जिस विक्रम सारा भाई रिसर्च इंस्टीट्यूट में पढ़ते हो ना, मैं वही विक्रम सारा भाई हूँ। लड़का यह सुनकर अंचभित रह गया।

ऐसे थे हमारे जैन समाज के गौरव विक्रम सारा भाई।

जगदीश चन्द्र बसु

पौधों में जीवन की खोज करने वाले डॉक्टर जगदीश चन्द्र बसु ने अपनी एक पुस्तक में लिखाा कि कोलकाता के जिस साइंस कॉलेज में वे पढ़ते थे, उस कॉलेज में एक दिन एक जैन विद्वान का प्रवचन हुआ था। उन विद्वान बताया था कि जैन दर्शन पेड़-पौधों में जीवन मानता है तब उनकी यह बात सुनकर सभी छात्रों ने उनकी इस बात का मजाक उड़ाया था। पर मुझे उनके इस वाक्य ने पौधों में जीवन खोजने के अनुसंधान पर विवश कर दिया। आज सम्पूर्ण विश्व में वैज्ञानिक जगदीश चन्द बसु का नाम पेड़-पौधों में जीवन की खोज के लिये जाना जाता है।

इसी जैन दर्शन को पढ़कर महान राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने हिन्दू जीवन शैली अपना ली और आजीवन मांस खाने का त्याग कर दिया।

- डॉ. अनेकान्त जैन लाल बहादुर संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली

भारतीय इतिहास की श्रेष्ठ नारी :

मन्दोदरी

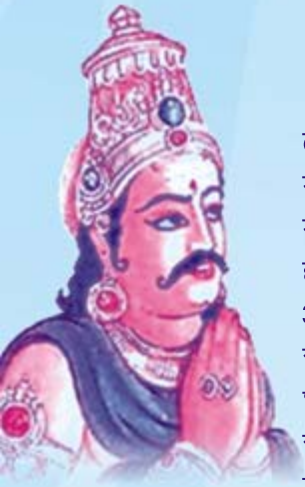

लंका नरेश रावण की धर्मपत्नी मन्दोदरी को सती नारियों में महत्वपूर्ण स्थान है। राजा मय और रानी हेमवती की सुपुत्री रानी मन्दोदरी बहुत विदुषी महिला थी और उन्हें अनेक शास्त्रों का गहरा अध्ययन था। पद्मपुराण के अनुसार मन्दोदरी रावण की परामर्शदात्री भी थी। अनेक अवसरों पर मन्दोदरी अनेक घटनाओं और उनके परिणामों का पूर्व से अनुमान कर लेती थी। रावण की 18000 रानियाँ थीं परन्तु अत्यन्त सुन्दर मन्दोदरी को उसके विशिष्ट गुणों के कारण उन्हें पटरानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य रविषेण ने मन्दोदरी को सरस्वती, लक्ष्मी और नारियों में सर्वोत्तम कहा है।

एक बार खरदूषण विद्याधर ने रावण की बहन चन्द्रनखा का अपहरण करके ले गया तो रावण ने अत्यंत क्रोध में खरदूषण पर आक्रमण करने को तैयार हो गया तब मन्दोदरी ने रावण को समझाया कि हे नाथ! कन्या तो पराया धन होती है। उसे पिता का घर त्यागना ही होता है। खरदूषण आपकी बहन को ले गया है, वह कई विद्याओं में पारंगत है। यदि वह युद्ध में हार जायेगा तो अपहरण के दोष से कोई भी दूसरा व्यक्ति चन्द्रनखा से विवाह नहीं करेगा और उसे विधवा के समान जीवन व्यतीत करना होगा।

जब रावण ने सीता का हरण किया तब भी मन्दोदरी ने रावण को बहुत समझाया। मन्दोदरी ने कहा - हे नाथ! सीता में ऐसा कौन सा गुण है जो मुझमें नहीं है ? मैं अपनी इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ हूँ। रावण के न मानने पर मंदोदरी ने स्पष्ट रूप से कहा - हे दशानन! लगता है कि राम और लक्ष्मण समीप आ गये हैं। जिस प्रकार अश्वग्रीव और तारक आदि राम के द्वारा मरण को प्राप्त हुये । क्या आप भी इस तरह से मरण को प्राप्त होना चाहते हैं ?

जब रावण नहीं माना तो मन्दोदरी ने शुक आदि मन्त्रियों को बुलाया और रावण को गंभीरता से समझाने के लिये कहा। परन्तु मन्त्रियों ने असमर्थता व्यक्त कर दी क्योंकि वे जानते थे कि रावण किसी नहीं सुनेंगे। फिर भी रानी मन्दोदरी ने अंतिम क्षण तक रावण को समझाने का पूरा प्रयास किया। मन्दोदरी ने अपने पति की भक्ति की परन्तु उसके गलत

कामों का श्रेष्ठ पत्नी के रूप में उसका विरोध भी किया।

जब रावण की मृत्यु हो गई तो मन्दोदरी बहुत दुःखी हुई। तब राम ने मन्दोदरी आदि रानियों को समझाया मन्दोदरी ने शांत परिणामों से विचार किया और आर्यिका शशिकान्ताजी से धर्म श्रवण किया और अत्यंत वैराग्य भाव से चन्द्रनखा आदि 48000 नारियों के साथ आर्यिका दीक्षा ले ली।

मन्दोदरी ने आर्यिका के व्रत के साथ अपूर्व साधना की और जीवन के अन्त में समाधिमरण पूर्वक स्वर्ग में गमन किया।

भाग्य और पुरुषार्थ

एक सज्जन बहुत गरीब और दुखी थे। उनसे धर्म में मन लगाने की बात करते तो कह देते कि इस समय भाग्य साथ नहीं दे रहा, क्या करूँ ? कुछ दिनों में भाग्य ने पलटा खाया और वे लखपति बन गये।

एक दिन उनसे मिलन हो गया तो उनसे कहने लगे - पण्डितजी! मैंने बड़ी मेहनत से धन कमाया है।

मैंने पूछा - जब आप गरीब थे, तब तो भाग्य को दोष देते थे और आज पुरुषार्थ, मेहनत की बात कर रहे हो। या भाग्य को मानो या पुरुषार्थ को। ऐसा क्यों करते हो कि - मीठा मीठा गप - कड़वा कड़वा थू। कुछ वर्ष बाद वे फिर गरीब हो गये।

मैंने कहा - अब पुरुषार्थ कहाँ गया ? वे कहने लगे यह सब तो भाग्य के आधीन है।

मैंने समझाया - बाहर की सामग्री भाग्य से मिलती है। पुरुषार्थ अपने भावों में हो सकता है, दूसरी वस्तु में पुरुषार्थ नहीं चलता है।

छपते-छपते

27 दिसंबर को फुटेरा ग्राम जिला दमोह में श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन निर्माण हेतु **भूमि शुद्धि समारोह एवं सरस्वती विधान** सम्पन्न हुआ यह कार्यक्रम **श्रीमती कुसुम महेन्द्र गंगवाल जयपुर एवं डॉ. बासंतीबेन शाह मुम्बई** के मुख्य आतिथ्य में **श्री विराग शास्त्री** के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

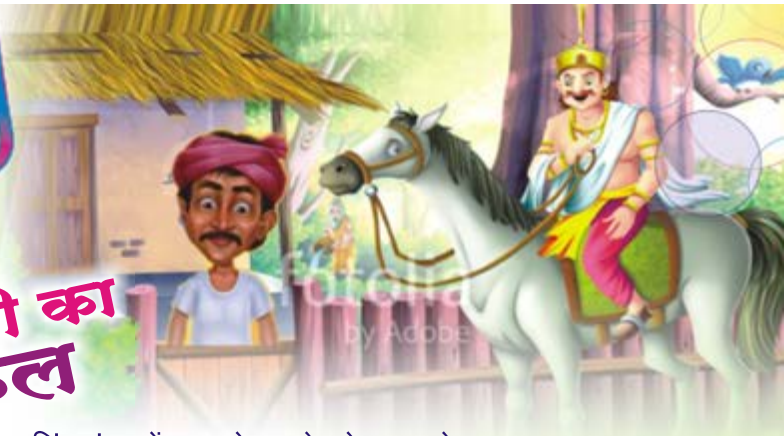

करनी का फल

महाराज जयसिंह जंगल में प्यास से तड़पने लगे, प्यास से उनका गला सूखा जा रहा था। कुछ चले ही थे कि कुछ दूर पर एक झोपड़ी दिखाई दी। झोपड़ी के सामने पहुँचकर उस गरीब किसान से राजा ने पानी मांगा। किसान ने राजा को घड़े का ठण्डा पानी पिलाया और दूध और चावल की माठी खीर खिलाई।

राजा को आज का भोजन बहुत स्वादिष्ट लगा। राजा ने एक कागज में कुछ लिखकर किसान को देते हुये कहा - जब कभी तुम्हारे जीवन पर कुछ संकट पड़े तो मेरे पास आना। मैं जयपुर में रहता हूँ। इतना कहकर राजा चला गया। किसान ने वह कागज अपनी पत्नी को दे दिया।

कुछ दिन बाद गांव में अकाल पड़ा। अनाज के बिना लोग एक-एक दाने को तरसने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। ऐसे कठिन समय में किसान की पत्नी को राजा के वचन की याद आई।

वह कागज लेकर किसान जयपुर पहुँच गया और राजभवन के कर्मचारी को कागज दिखाकर राजा के महल में भी पहुँच गया। राजा उस समय भगवान के सामने पूजा कर रहा था। बहुत देर तक राजा की क्रिया देखकर किसान कहने लगा - राजन्! आप बार-बार हाथ फैलाते हैं, फिर जमीन पर हाथ पटकते हैं, इस बीमारी का कुछ इलाज कराइये।

राजा ने समझाया - भाई! यह बीमारी नहीं, मैं भगवान से प्रार्थना कर रहा था।

किसलिये ? - किसान ने पूछा।

सुख साधन मांगने के लिये। - राजा ने कहा।

आप भी भिखारी हैं, हम तो आपको राजा समझ रहे थे। आप तो भगवान से मांग रहे हैं। जब आप भगवान से मांग रहे हैं तो भगवान से मैं भी मांग लूँगा। आपसे क्यों मांगे ?

भाई! भगवान ही सबको देता है।

मैं मांगूँगा तो क्या मुझे भी दे देगा ? - किसान ने पूछा।

हाँ भाई ! किस्मत में होगा तो जरूर देगा।

राजन ! किस्मत देती है या भगवान ?

इन प्रश्नों को सुनकर राजा का परेशान हो गया।

इस प्रसंग से यह पता चलता है कि सबको अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है। यदि भगवान देता तो सबको देता। सच बात तो यह कि कोई किसी को कुछ नहीं दे सकता, सब अपनी-अपनी करनी का ही फल पाते हैं।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

01 January

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

02 February

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

05 May

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

06 June

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

09 September

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

10 October

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

पता – सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल,

CALENER

2019

संपादक – विराग शास्त्री

03 March

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

04 April

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

07 July

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

08 August

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

11 November

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

12 December

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

जबलपुर 482 002 (म.प्र.) मोबा. 9300642434

मायाचार का दुष्परिणाम

दुर्ग पर्वत पर चारण ऋद्धिधारी गुणनिधि नाम के मुनिराज चार दिन के उपवास का नियम लेकर जंगल में आत्मसाधना कर रहे थे। पूरे नगर में मुनिराज की आत्मसाधना की चर्चा हो रही थी। सभी उनके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे। चातुर्मास के बाद मुनिराज आकाश मार्ग से विहार कर गये। उसी पर्वत के पास आलोक नगर में मृदुमति नाम के दूसरे मुनिराज आहार के लिये तो तो लोगों ने समझा कि यही गुणनिधि मुनिराज मुनिराज हैं और उनकी अपूर्व आत्मसाधना के लिये उनकी विशेष पूजा और भक्ति की और विशेष भक्तिपूर्वक उन्हें आहार दिया। मुनि मृदुमति को यह मालूम था कि यह मुझे गुणनिधि मुनि समझकर मेरी इतनी भक्ति कर रहे हैं परन्तु सम्मान पाकर बहुत खुश हुये और उन्होंने यह नहीं कहा कि वे गुणनिधि मुनि नहीं हैं। बाद में भी उन्होंने इस अपराध के लिये अपने गुरू से कोई प्रायश्चित नहीं लिया, उनमें मायाचार का परिणाम आ गया। आयु के अंत में पूर्व में आयु बंधने के कारण मृदुमति स्वर्ग में देव बन गये और स्वर्ग की आयु समाप्त कर वे मायाचारी के परिणाम से शल्लकी वन में हाथी बन गये। इस हाथी को रावण ने पकड़कर अपनी सेना में रख लिया और इसका नाम त्रिलोकमण्डन रखा।

बाद में जब राम ने रावण को पराजित किया तब युद्ध के बाद त्रिलोकमण्डन हाथी को अयोध्या ले आये। एक दिन अचानक पूर्व भव के गुणनिधि के जीव त्रिलोकमण्डन को बहुत क्रोध आ गया और वह पूरे नगर में उत्पात करने लगा, उसने कई पेड़ उखाड़कर फेंक दिये, लोग डरकर जान बचाने के लिये यहाँ-वहाँ भागने लगे। अचानक भरत को सामने देखकर त्रिलोकमण्डन हाथी शांत हो गया। भरत ने उसे सम्बोधित किया उस हाथी को जातिस्मरण हो गया। उसे अपने पूर्व भव का मायाचारी का अपराध याद आ गया। उसे आत्मज्ञान हो गया और उसने हिंसा का त्याग कर दिया। अब वह सूखे पत्ते खाने लगा और अत्यंत शांत भाव से समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया और स्वर्ग में पुनः देव हुआ।

गर्व किस पर

प्रेरक प्रसंग

एक सम्राट मुनिराज के पास उपदेश सुनने पहुँचे। सम्राट ने बड़े गर्व से अपना परिचय दिया।

मुनिराज ने पूछा - तुम रेगिस्तान में भटक जाओ और प्यास से दम घुटने लगे और उस वक्त कोई गन्दे नाले का लोटा भर पानी लाकर तुमसे कहे - इस लोटे भर पानी का मूल्य आधा राज्य है तो तुम क्या करोगे ?

सम्राट ने कहा - मैं तुरन्त वही पानी ले लूँगा।

फिर मुनिराज ने कहा - यदि वह सड़ा पानी पेट में जाकर रोग उत्पन्न कर दे और तुम मरने लगो और उस समय एक वैद्य (डॉक्टर) पहुँचकर तुमसे कहे कि अपना बाकी बचा हुआ आधा राज्य दे दो तो मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा। तब तुम क्या करोगे ?

राजा बोला - उसे आधा राज्य देकर अपने प्राणों की रक्षा करुँगा। जीवन ही नहीं तो राज्य किस काम का ?

तब मुनिराज ने कहा - जिस राज्य की कीमत एक लोटा सड़ा पानी और उससे उत्पन्न रोग से ठीक होने के की दवा है - ऐसा राज्य किस काम का और उस पर घमंड क्या करना ?

विशाल हृदय

पाण्डवों को वनवास देकर कौरव भाई बहुत खुश थे। वे सब खुशियाँ मनाने एक गन्धर्व विद्याधर के बाग पहुँच गये। गन्धर्व देवों ने सोचा कि इनकी खुशियों के उत्सव से पूरा बाग खराब हो जायेगा। उन्होनें कौरवों से उनके बाग में उत्सव मनाने से मना किया परन्तु कौरव नहीं माने। तब कौरवों को पकड़ने के लिये गन्धर्व आगे बढ़े तो सारे कौरव डरकर भाग गये पर उन्होंने दुर्योधन को पकड़ लिया। जब यह समाचार युधिष्ठिर को मिला तो उन्होंने कहा - हम घर में 100 कौरव और पाण्डव पाँच हैं परन्तु दूसरों के लिये 105 हैं। उन्होंने अर्जुन को भेजकर दुर्योधन को छुड़वा लिया।

संदेश - परिवार के मतभेद सामाजिक जीवन में कमजोरी नहीं बनना चाहिये ।

अच्छा मौसम

सेठ ने अपने चारों पुत्रों की प्रतिभा और सोच जानने के लिये पूछा - बच्चो ! वर्ष के चारों मौसम में से तुम लोगों कौनसा मौसम अच्छा लगता है ? बड़े लड़के ने कहा - जब कोयल गाती है, नये फूल खिलते हैं; ऐसी बसंत ऋतु अच्छी लगती है। दूसरे ने कहा - मुझे तो बरसात का मौसम अच्छा लगता है, चारों ओर हरियाली और ठंडा सुहावना सा मौसम। तीसरे ने कहा - मुझे शीत का मौसम अच्छा लगता है। यह मौसम स्वास्थ्यवर्धक होता है और इस मौसम में बीमारियाँ भी कम होतीं हैं। चौथे छोटे लड़के ने कहा - पिताजी ! मुझे तो सभी मौसम एक समान लगते हैं क्योंकि मौसम से सुख-दुःख का कोई सम्बन्ध नहीं, सुख-दुःख का कारण राग है, कोई बाहर की वस्तु नहीं। हमारे मुनिराज तो भीषण गर्मी में भी पर्वत पर खड़े होकर आनन्द का अनुभव करते हैं।

जय जिनेन्द्र का इतिहास

आज से लगभग 175 वर्ष पूर्व वि.सं. 1884 में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी दिन मंगलवार को अनेक पूजनों के रचनाकार कविवर पं. वृन्दावनदासजी ने काशी से दीवान अमरचन्दजी को जयपुर पत्र लिखा था। इसमें इन्होंने पत्र के प्रारम्भ में दीवान साहब को 'जय जिनेन्द्र' कहकर सम्बोधित किया है। वृन्दावन विलास में लिखा है -

वृन्दावन तुमको कहत है श्रीमत जयति जिनन्द ।
काशीतें सो बांचियो, अमरचन्द सुखकन्द ।।

और इतना ही नहीं, अन्त में पुनः ऋषभदास, घासीराम आदि समाज के अन्य प्रमुख पंच लोगों को भी जय जिनेन्द्र कहकर ही अभिवादन किया है।

वृन्दावन विलास में लिखा है -

ऋषभदास पुनि घासीराम और पंच ने सुगुन निधान।
बिगति बिगति श्री जयति जिनन्द, कहियों सबसों धरि आनन्द ।।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान में जैन समाज में पारस्परिक अभिवादन हेतु 'जय जिनेन्द्र' कहने की जो परम्परा है, वह कोई नई परिपाटी नहीं है, अपितु कम से कम से दो सौ वर्ष प्राचीन है।

- डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

विशेष - एक जनश्रुति यह भी है कि सर्वप्रथम आचार्य भद्रबाहु ने अभिवादन में 'जयजिनेन्द्र' कहने की प्रेरणा दी थी।

आगे की यात्रा

प्रसिद्ध विद्वान गुरू गोपालदास बरैया मुम्बई से मुरैना से जा रहे थे। उनके प्रशंसक उन्हें पहुँचाने के लिये आये थे। पण्डितजी ने अपने एक साथी से कहा - सामान ज्यादा है इसे तुलवा लो। जितना ज्यादा सामान हो उसका किराया देकर बुक करा लो।

वहीं पास में गाड़ी का गार्ड खड़ा था। उसने पण्डितजी की बात सुनी और वह पास आकर पण्डितजी से बोला - सामान तुलवाने की जरूरत नहीं। मैं तो साथ चल ही रहा हूँ।

पण्डितजी ने चकित होकर उसकी ओर देखा और मुस्कराते हुये उससे पूछा - तुम कहाँ तक जाओगे भाई ?

गार्ड बोला - मैं भुसावल तक चल रहा हूँ। आप चिन्ता मत करें।

पण्डितजी ने पूछा - तुम भुसावल तक चल रहे हो भाई! उसके आगे क्या होगा ?

गार्ड ने सहज भाव से उत्तर दिया - कुछ नहीं होगा। मैं दूसरे गार्ड को बोल दूँगा। वह आगे वाले गार्ड को कह देगा।

पण्डितजी ने पूछा - उसके आगे क्या होगा ?

गार्ड ने उत्तर दिया - आगे का प्रश्न ही कहाँ है ? आप तो मुरैना ही जा रहे हैं।

पण्डितजी ने गम्भीर होकर उत्तर दिया - ऐसा नहीं है भाई। मेरी यात्रा तो बहुत आगे समाप्त होगी। इसलिये चिन्ता हो रही है।

गार्ड ने पूछा - क्या आप मुरैना से आगे जा रहे हैं ? मुझे तो यही पता है कि मुरैना तक जा रहे हैं।

पण्डितजी ने कहा - बात तो ठीक है। मैं अभी मुरैना जा रहा हूँ, मगर मेरी यात्रा तो समाप्त होगी मोक्ष में जाकर। क्या तुम्हारा कोई साथी गार्ड वहाँ तक पहुँचा देगा ?

यह सुनकर गार्ड ने क्षमा मांगी।

(सार की बात यह है कि हम मायाचारी से थोड़े से लाभ लेने के लिये अपने परिणाम बिगाड़कर अपना भव न बिगाड़े ।)

बदलता जीवन

चोर ब्रह्मचारी बनकर सेठ के चैत्यालय से प्रतिमायें चुरा लाया। यह तो धार्मिक सेठ था, जिसने चोर के इस पाप को क्षमा कर दिया और लोगों को यह बताया कि मैंने ही ये प्रतिमा इसे दी थी और उपगूहन अंग का पालन किया। भाव बदले और चोर तपस्वी बन गया!

दूसरा जीवन – अकृतपुण्य के रूप में। पिछला जीवन तपस्वी का था तो सेठ के घर जन्म लिया लेकिन प्रतिमा चोरी के पाप के फल में गरीब हो गया और जीवन में एक बार भी मिष्ठान्न खाने को नहीं मिला। बस एक बार बहुत संघर्ष के बाद एक कटोरी खीर खाने को मिली वह भी योग्य पात्र को आहार दान में दे दी। एक मुनिराज की सौम्य मुद्रा से प्रभावित होकर उनके पीछे चल पड़ा और मुनिराज गुफा में गये तो वह बाहर ही खड़ा हो गया। भूखा शेर आया तो निर्भय होकर सामने खडा हो गया और शेर ने उसे खा लिया। तीसरा जीवन कामदेव के रूप में – सुख और दुःख का मिश्रित जीवन। भाईयों के ईर्ष्या परिणाम से दुखी होकर घर छोड़ा । फिर जहाँ–जहाँ जाते, पहले दुख और बाद में अपार धन मिल जाता। जो स्त्री उसका रूप देखती उस पर मोहित हो जाती। जीवन के अंत में मुनिदीक्षा अंगीकार कर मोक्ष प्राप्त किया।

कुछ हो जाये तो फोन करना

अमेरिका में बड़ी कम्पनी में जॉब कर रहे बेटे को जब मालूम पड़ा कि भारत में रह रहे उसके बूढ़े पिता का स्वास्थ्य बहुत खराब है वह तुरन्त ही भारत आ गया और अपने पिता का अच्छे डॉक्टर से इलाज कराया और पिता के स्वस्थ होने पर वापस अमेरिका लौट गया

लगभग 3 माह बाद माँ ने फिर पिता के स्वास्थ्य खराब होने की जानकारी दी और कहा कि इस बार हालत बहुत गम्भीर है। बेटे ने फिर ऑफिस से छुट्टी ली और भारत आ गया । उसने फिर से अच्छे हॉस्पिटल में पिता का इलाज करवा दिया और भाग्य से इस बार भी पिता स्वस्थ हो गये तो वह वापस अमेरिका लौट गया। लगभग 4 माह बाद माँ ने फिर बेटे को फोन किया कि बेटा इस बार तो पिता की स्वास्थ्य ज्यादा गम्भीर लग रहा है। तब बेटा बोला - माँ ! मैं पहले भी दो बार इण्डिया आया। 'कुछ होता' तो है नहीं। पापा हमेशा अच्छे हो जाते हैं। मुझे यहाँ का सारा काम छोड़कर आना पड़ता है बहुत नुकसान होता है। अब जब 'कुछ हो जाये' तो मुझे फोन करना। इतना कहकर उसने फोन काट दिया।

बूढ़ी माँ कम पढ़ी-लिखी होने पर भी 'कुछ होने' का अर्थ समझ चुकी थी।

वीडियो कॉलिंग से माँ का अंतिम संस्कार

वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से भारतीय संस्कारों पर प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया है। जो माता - पिता अपने बच्चों के जीवन के लिये पूरा जीवन अर्पित कर देते हैं वे बच्चे अपनी सुख-सुविधाओं में मग्न होकर संस्कारों को भूल जाते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिला महाराष्ट्र के पालघर में। यहाँ एक 65 वर्षीय निरी बाई पटेल नाम की महिला का देहांत हो गया तो गांव के सरपंच ने अहमदाबाद में रह रही उसकी इकलौती बेटी को समाचार दिया गया। बेटी ने आधुनिक साधनों से पालघर पहुँचने के बजाय सरपंच से पालघर पहुँचने में असमर्थता बताई और गांव के लोगों को अंतिम संस्कार करने के लिये कहा और कहा कि अंतिम संस्कार की सारी प्रक्रिया ऑन लाइन वीडयो कॉल से दिखाई जाये। गांव के लोगों ने उनकी बात मानकर अंतिम संस्कार की सारी विधि लाइव वीडियो से दिखाई। इसके बाद लड़की ने माँ की अस्थियाँ कूरियर से भेजने के लिये कहा। अपनी बेटी को कॉन्वेन्ट स्कूल में पढ़ाकर योग्य बनाने का सपना देखने वाली माँ ने शायद कभी नहीं सोचा होगा कि उसकी बेटी उसके अंतिम संस्कार में भी शामिल नहीं होगी। ये है हमारी आज की शिक्षा पद्धति।

मोबाइल को सब कुछ मानने के विरुद्ध अभियान -

जियो ने मरने की व्यवस्था कर दी

अगर आप अपने बच्चे को मोबाइल या टेबलेट दे रहे हैं या उनके सामने लगातार मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं .....तो आपको इससे जुड़े खतरे भी पता होना चाहिये।

बेंगलौर के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेस परिसर के शट क्लीनिक में तीन-चार बच्चे अपने माता-पिता के साथ पहुँचे। उनमें से एक विशाल नाम के बच्चे से डॉक्टर ने पूछा के आपके कितने दोस्त हैं? इस प्रश्न पर विशाल ने वापस डॉक्टर से प्रश्न किया - ऑनलाइन या ऑफलाइन ? फिर विशाल स्वयं ही बोला - ऑनलाइन 500 से ज्यादा और ऑफलाइन 3 या 4। विशाल ने बताया कि वह रोज 8 से 9 घंटे पबजी गेम खेलता है। यह गेम ऑनलाईन ही खेला जाता है। जिसमें विश्व के कई देशों के लगभग 100 लोग एक साथ खेलते हैं। यह समस्या बहुत गम्भीर है। जियो कम्पनी के कारण 2016 से इंटरनेट सस्ता हो जाने से ये समस्या और भी गम्भीर हो गई है।

देश के 991 स्कूलों के मात्र कक्षा आठवीं के बच्चों पर किये गये एक सर्वे में पता चला है कि भारत में 68 प्रतिशत बच्चे कोई न कोई गेम अवश्य खेल रहे हैं। देश में 22 करोड़ से ज्यादा लोग गेम खेलते हैं और ये गेम की लत उन्हें बीमार बना रही है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि गेम की लत की शिकार बच्चे अपने को बीमार नहीं मानते। शट क्लीनिक पर हर सप्ताह 4-5 गेम की लत के शिकार नये बच्चे इलाज के लिये आ रहे हैं। क्लीनिक की सीनियर डॉक्टर अश्विनीजी कहती हैं कि हमारे पास ऐसे भी केस आ रहे हैं जिनमें बच्चों की फिजिकल एक्टीविटी खत्म हो गई है। बच्चे नहा भी नहीं पा रहे हैं। रात में नहीं सोते और दिन में सोते हैं। स्कूल जाने में उनका मन नहीं होता। ये बीमारी अब छोटे शहरों के बच्चो में भी देखी जा रही है।

हैदराबाद के 12वीं कक्षा के तेजस को गेम की लत लग गई तो पढ़ाई में ध्यान नहीं होने से 10 वीं में उसके नम्बर कम आये। बार-बार समझाने पर भी कोई सुधार नहीं हुआ तो उसे स्कूल से निकाल दिया गया। घर वालों ने गेम खेलने से रोका तो वह तोड़फोड़ करने लगा। उसका वजन भी बढ़ गया।

सौरभ और उसकी पत्नी सुमन दोनों आई टी कम्पनी में काम करते हैं। उन्होंने 4 वर्ष पूर्व अपने 5वीं क्लास के बेटे को मोबाइल दिलाया। सौरभ और सुमन जब ऑफिस लौटते तो उनका अधिकांश समय इंटरनेट पर बीतता था। माँ-बाप से समय न मिलने के कारण उसे गेम की लत पड़ गई। बड़ी मुश्किल से इसकी लत अब कम हुई है, वह अब

बास्केटबॉल खेलने लगा है।

लखनऊ का सौरभ 12वीं क्लास में है। पिता बिजनेसमेन हैं और माँ दूसरे शहर में नौकरी करती हैं। तीन साल पहले अकेलापन मिटाने के लिये सौरभ ने मोबाइल गेम खेलना शुरू किया। उसे एक वर्ष में गेम की लत लग गई इससे घर में झगड़े बढ़ गये। उसका 10वीं का मैथ्स का पेपर छूट गया। दुबारा परीक्षा दी परन्तु उसका मनोबल टूट गया। अब इसका इलाज रीहेब सेंटर में चल रहा है।

क्या आपको पता है कि दुनिया के सबसे अमीरव्यक्ति और माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी के मालिक बिल गेट्स ने अपने बच्चों को 14 साल तक की उम्र तक मोबाइल नहीं दिया। इसी तरह एप्पल जैसी बड़ी कम्पनी के संस्थापक और दुनिया को आई फोन देने वाले स्टीव जॉब्स ने 2011 में न्यूयार्क टाइम्स को दिये एक इंटरव्यू में बताया था कि उन्होंने कभी अपने बच्चों को आई पेड इस्तेमाल नहीं करने दिया। दुनिया में मोबाइल से लाभ हानि के सम्बन्ध में बहुत रिसर्च चल रही है।

टाइम मेग्जीन के अनुसार जो छोटे बच्चे 1 साल की उम्र में ही मोबाइल देखना शुरू कर देते हैं ये बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में देर से बोलना शुरू करते हैं। एम्स ने एक रिपोर्ट में बताया कि लम्बे समय तक मोबाइल के प्रयोग से ब्रेन हेमरेज का खतरा बढ़ जाता है। दक्षिण कोरिया के वैज्ञानिक ने बताया है कि मोबाइल में गेम खेलने या अधिक देर तक वीडियो देखने से आंखों की पलक बन्द नहीं होती जिससे ड्राई आईस (आंखों की तरलता समाप्त होना) की समस्या पैदा हो रही है। जिससे अनेक तरह की बीमारियाँ पैदा हो रहीं हैं। दुनिया की प्रसिद्ध एडिक्शन थैरेपिस्ट मैंडी सालगिरी ने तो यहाँ तक कहा कि बच्चों को स्मार्ट फोन देना उन्हें एक ग्राम कोकीन (एक तरह का नशा जिसकी लत होने जाने पर उसके बिना मरने की बैचेनी होती है।) देने के बराबर है।

मोबाइल हमारे घरों में दीवार बन रहा है। यह बच्चों को अपने ही घर में बंद कर रहा है। उन्हें समय दीजिये और उनके साथ उनकी खुशी और समस्या में सहभागिता कीजिये वरना यह दीवार आपको बहुत तकलीफ देगी।

- संपादक

आपके प्रश्न - आगम के उत्तर

प्रश्न -1. मंदिरों या धार्मिक जुलूसों में समक्ष बीन बजाने या सपेरे का नृत्य करना उचित है क्या ?

उत्तर - भगवान के सामने भक्ति नृत्य ही होना चाहिये। सपेरा नृत्य तमाशे का नृत्य है। भक्ति या वैराग्यपरक नहीं है। इससे लोगों को राग उत्पन्न होता है।

प्रश्न - 2. सातवें नरक के नीचे इतर निगोद है नित्य निगोद ?

उत्तर - दोनों तरह के निगोद तीनों लोकों में पाये जाते हैं। नरक के नीचे भी दोनों तरह के निगोदिया जीव पाये जाते हैं।

प्रश्न - 3. कुगुरुओं और कुदेवों को पूजने में कितना पाप लगता है ?

उत्तर - असंख्य जीवों की हत्या के बराबर पाप लगता है।

प्रश्न - 4. कच्चा पपीता अभक्ष्य और पका पपीता भक्ष्य क्यों है ?

उत्तर - कच्चा पपीता क्षीर फल है उससे दूध निकलता है। इसलिये अभक्ष्य है और पका पपीता क्षीर फल नहीं होने से भक्ष्य है।

प्रश्न - 5. किसी के घर पर मंदिर की छाया पड़ने अशुभ माना जाता है ऐसा क्यों ?

उत्तर - जैन शास्त्रों में इस तरह का कोई विधान नहीं है। अशुभ और शुभ का सम्बन्ध पाप और पुण्य के उदय से होता है।

प्रश्न - 6. जिनागम में आता है कि राजकुमार नेमि के विवाह में 56 करोड़ बाराती आये थे - ये बात कुछ समझ में नहीं आती ?

उत्तर - जिनागम में 56 कोटि बाराती के आने की बात आई है। इसका अर्थ यह है कि 56 तरह के गोत्र वाले यादववंशी आये थे।

प्रश्न - 7. क्या वर्तमान समय में भरत क्षेत्र से कोई मुनि मोक्ष जा सकते हैं ?

उत्तर - भरत क्षेत्र में मोक्ष जाने की योग्यता वाले जीव वर्तमान में जन्म नहीं लेते।

प्रश्न - 8. कई साधर्मी गंधोदक को पी लेते हैं यह क्रिया उचित है क्या ?

उत्तर - गंधोदक को कभी नहीं पीना चाहिये। हम स्वाहा कहकर जलधारा करते हैं इसलिये वह निर्माल्य हो जाता है। दूसरी बात शरीर के 9 मल द्वार हैं उनमें एक मुंह भी है। मल द्वार में पवित्र जल को डालना पाप ही है।

हमारे नये परम शिरोमणि संरक्षक - श्री अजितप्रसादजी जैन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन द्वारा विगत 15 वर्षों से बाल - युवा वर्ग में जिनधर्म के लिये किये जा रहे प्रयासों से प्रभावित होकर श्रीमान् अजितप्रसाद जैन श्री वैभव जैन परिवार ने संस्था के परम शिरोमणि संरक्षक के रूप में स्वीकृति प्रदान की। श्रीमान् अजितप्रसादजी आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली, तीर्थधाम मंगलायतन, तीर्थधाम चिदायतन, ढ़ाई द्वीप जिनायतन इंदौर एवं दिव्य देशना ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष हैं। साथ ही जिनधर्म की प्रभावना की गतिविधियों में मुक्तहस्त से सहयोग करते हैं। संस्था ऐसे गौरवशाली व्यक्तित्व को परम शिरोमणि संरक्षक के रूप में पाकर गौरवान्वित है।

श्री विवेक जैन, बहरीन

आप बहरीन देश में रहते हुये भी जिनधर्म के प्रति समर्पित है और निरंतर जिनधर्म के प्रचार-प्रसार के लिये योगदान देते रहते हैं। आप अपने परिवार में भी जिनधर्म के संस्कारों को बनाये रखने का प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। आपको संस्था के परम शिरोमणि संरक्षक के रुप में पाकर हम गौरवान्वित हैं।

अष्टान्हिका महापर्व पर अष्टपाहुड़ विधान सम्पन्न

जबलपुर - बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में अष्टान्हिका महापर्व पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा रचित श्री अष्टपाहुड़ मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ। दिनांक 16 नवम्बर से 23 नवम्बर तक आयोजित इस विधान में दिल्ली से पधारे से पण्डित राकेशजी शास्त्री के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। विधान श्री विराग शास्त्री के नेतृत्व में श्री प्रशांतजी, श्री अजितजी, राजीवजी के सहयोग से सम्पन्न कराया गया।

हमारे नये स्थायी सदस्य

संस्था की स्थायी सदस्यता के अंतर्गत मात्र 5000/- रु.में स्थायी सदस्यता प्रदान की जाती है। इसमें सदस्य को 15 वर्ष चहकती चेतना के साथ संस्था द्वारा प्रकाशित/निर्मित समस्त साहित्य और सीडी भेजी भेजी जायेगी। इसमें पूर्व प्रकाशित उपलब्ध सामग्री भी भेजी जायेगी। इसके अंतर्गत दो साधर्मियों ने स्थायी सदस्यता ग्रहण की -

1. मानव जैन, मुम्बई
2. अभय जैन, अहमदाबाद

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके सदस्य बन सकें - पेटीएम भुगतान सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब आप सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाटसएप / करें।

सोनगढ़ में जिनदेशना बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

सोनगढ़ - आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह में **जिनदेशना बाल संस्कार शिविर** सानन्द सम्पन्न हुआ। दिनांक 23 नवम्बर से 25 नवम्बर तक आयोजित इस कार्यक्रम में जयपुर से पधारे पण्डित पीयूष शास्त्री ने सात तत्व की भूल एवं श्री विराग शास्त्री जबलपुर ने कर्म सिद्धान्त पर कक्षायें लीं। कार्यक्रम में प्रातः जिनेन्द्र पूजन, कक्षायें, दोपहर में पुनः कक्षायें, रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन हुआ। रात्रि में महापुरुषों की कथाओं के माध्यम से जिनधर्म के गौरव का परिचय कराया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम विद्यालय के प्राचार्य श्री सोनू शास्त्री के संयोजकत्व में श्री आतमप्रकाश शास्त्री, श्री अनेकान्त शास्त्री, श्री प्रियम शास्त्री, श्रीमति शिखा जैन के सहयोग से सम्पन्न हुये।

उदयपुर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

उदयपुर - यहाँ नेमिनगर स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर में नवनिर्मित श्री मानस्तंभ में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव पूरी गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 30 नवम्बर से 02 दिसम्बर तक आयोजित इस कार्यक्रम में यागमण्डल विधान के पश्चात् वेदी शुद्धि की गई की। अंतिम दिन मंत्रोच्चार पूर्वक भगवान श्री सीमंधर स्वामी के जिनबिम्ब विराजमान किये गये। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. वीरसागर जी जैन दिल्ली, श्री विराग शास्त्री जबलपुर के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विधि विधान से विख्यात प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी देवलाली के निर्देशन में पण्डित अश्विन शास्त्री नौगामा, पण्डित विवेक शास्त्री सागर, पण्डित आशीष शास्त्री टीकमगढ़ के सहयोग से सम्पन्न हुये । सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इन्द्रसभा और वैराग्य नाटिका **परिणामों की विचित्रता** का मंचन हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम डॉ. महावीर शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर का नवीन प्रकाशन अब नहीं ...

बाल वर्ग में जिनधर्म के संस्कार और लौकिक जीवन जीने में संस्कार जीवन्त रहें - इस क्रम में अनेक सीडी और साहित्य के प्रकाशन के क्रम में **अब नहीं** के शीर्षक से रंगीन पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक में 13 कथाओं एवं नाटिकाओं के माध्यम से दैनिक जीवन में चलने वाली कुरीतियों की ओर ध्यान दिलाकर उन्हें तर्कपूर्वक छोड़ने की प्रेरणा दी गई है। ये सभी नाटिकायें पाठशालाओं में बच्चों के द्वारा मंचन की जा सकतीं हैं। इस पुस्तक के लेखक श्री विराग शास्त्री जबलपुर हैं। इस पुस्तक को मात्र 20/- रुपये में प्राप्त किया जा सकता है।

चहकती चेतना :

चैतन्य भास्कर बाल प्रतियोगिता

चहकती चेतना पत्रिका द्वारा स्कूल के अवकाश का सुदपयोग करने और बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा निखारने के उद्देश्य से **चहकती चेतना - चैतन्य भास्कर** प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत 12 पृष्ठीय एक न्यूज पेपर तैयार किया गया है। इस पेपर को निर्धारित नियमों के अंतर्गत तैयार करना है। इसे बच्चों के द्वारा स्वयं तैयार किया जायेगा। इसमें कम्प्यूटर टाईपिंग का उपयोग नहीं होगा। इस प्रतियोगिता में 8 वर्ष से 15 वर्ष तक के बच्चे चार आयु वर्ग में भाग ले सकेंगे। इसे हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती और मराठी में भरा जा सकता है। प्रत्येक आयु वर्ग में अलग-अलग पुरस्कार दिये जायेंगे। इस प्रतियोगिता में लगभग 500 पुरस्कार वितरित किये जायेंगे। इसे जमा करने की अंतिम तिथि 15 जून 2019 निर्धारित है। यह चैतन्य भास्कर पेपर आप 50 रु. प्रति पेपर शुल्क भेज कर प्राप्त कर सकते हैं। इस कार्य में आप अपने पाठशाला के बच्चों को भी शामिल कर सकते हैं। विजयी प्रतिभागियों के नाम चहकती चेतना में प्रकाशित किये जायेंगे।

इसकी प्रति प्राप्त करने के लिये राशि पेटीएम करें और अपना पता व्हाट्सएप्प करें ।

कोटा में सन्मति संस्कार संस्थान विद्यालय भवन का शिलान्यास

कोटा - राजस्थान की सुप्रसिद्ध नगरी कोटा नगरी में दादा बाड़ी में सन्मति संस्कार संस्थान के नवीन भवन का शिलान्यास संपन्न हुआ। श्री कुन्दकुन्द कहान तत्व प्रभावना समिति द्वारा विगत चार वर्षों से अस्थायी भवन में संचालित इस विद्यालय का उद्देश्य कक्षा 8 वीं से 10वीं तक के जैन समाज के बच्चों को लौकिक शिक्षा के साथ जिनधर्म के संस्कार देना है। लगभग 5000 वर्गफुट में बनने वाले इस भवन का शिलान्यास देश के अनेक विशिष्ट अतिथियों के द्वारा किया गया। दिनांक 14 दिसम्बर को सम्पन्न इस कार्यक्रम का शुभारम्भ पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के मंगल प्रवचन से हुआ। इसके पश्चात् जिनेन्द्र पूजन हुई और फिर पण्डित श्री देवेन्द्रजी जैन का मांगलिक प्रवचन हुआ। तदनन्तर शिलान्यास सभा में आमंत्रित अतिथियों के स्वागत के बाद विद्यालय की गतिविधियों का परिचय तथा विद्यालय के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। विधि विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित श्री विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में पण्डित अनिल धवल, पं.सुनील जी धवल, के द्वारा सम्पन्न हुये। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री वीनूभाई ने सभी का आभार व्यक्त किया। **- जय कुमार जैन, मंत्री**

भोर

बेटा उठ जा राजदुलारे
देखो कितनी हो गई भोर।
जल्दी से स्नान तू कर ले, चल चल जिनमंदिर की ओर।
जिनवर प्रक्षाल करेंगे, पंच प्रभु का भजन करेंगे।
अब प्रमाद को जल्दी छोड़, दौड़ लगा मंदिर की ओर।।

सीख

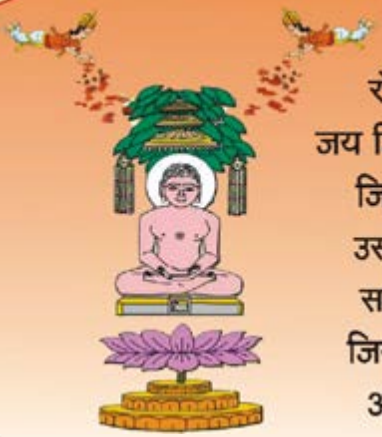

रोज सबेरे उठना सीखो,
जय जिनेन्द्र फिर कहना सीखो।।
जिनदर्शन जो रोज करेगा,
उसका जीवन सुखी रहेगा।
सदाचारमय जीवन जीना,
जिनशासन का अमृत पीना।
अच्छे-अच्छे काम करोगे,
जल्दी से भगवान बनोगे।।

ज्ञानदीप

मंगल ज्ञान का दीप जलाओ,
मिथ्यातम को अभी नशाओ।
अरहंत प्रभु की बात सुनो,
सुख से चेतन सदा रहो।
विपदायें कितनी भी आयें,
सहज शांति से सदा रहो।।

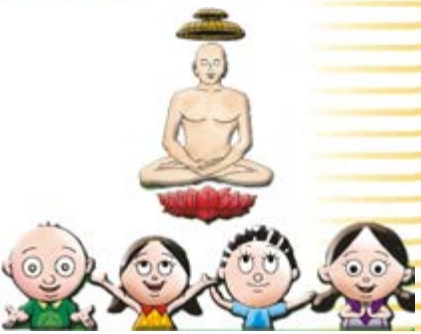

- विराग शास्त्री

जैन शासन पर गर्व के कुछ प्रसंग

महान जैन वीरांगना -नीरा आर्य

भारत के स्वाधीनता संग्राम में हर जाति, उम्र और वर्ग के लोगों ने अपना यथा संभव योगदान दिया। देश के लिये मर - मिटने वालों में जैन समाज भी पीछे नहीं रहा परन्तु आज देश की आजादी में जैनों के योगदान को याद नहीं किया जाता और न ही आज की पीढ़ी को इस इतिहास का परिचय है। ऐसी एक जैन वीरांगना थी नीरा आर्य। नीरा का जन्म 5 मार्च 1902 को उत्तरप्रदेश के छोटे से गांव खेकड़ा में जैन समाज के प्रतिष्ठित परिवार सेठ छज्जूमल के घर में हुआ। सेठ छज्जूमल का व्यापार पूरे देश में फैला था। विशेषकर इनके व्यापार का मुख्य केन्द्र कोलकाता था। इसलिये इनकी शिक्षा कोलकाता में ही हुई। नीरा के भाई बसंत आजाद हिन्द फौज में थे। नीरा आर्य युवा होने पर आजाद हिन्द फौज में रानी झांसी रेजिमेंट में सिपाही बन गईं। अंग्रेजों ने इन जासूसी करने का आरोप भी लगाया था। इन्हें नीरा नागिन भी कहा जाता था।

नीरा को अन्य लड़कियों के साथ अंग्रेजों के केम्प में जासूसी करने का काम सौंपा गया था। ये सभी लड़कियाँ पुरुषों की वेशभूषा में अंग्रेजों के केम्प में घूमती रहतीं थीं और उनकी गुप्त सूचनायें नेताजी तक पहुँचातीं थीं। इन्हें स्पष्ट आदेश था कि पकड़े जाने पर खुद को गोली मारकर समाप्त करना है। पर एक बार छोटी सी चूक से एक लड़की पकड़ी गई। तब नीरा और उसकी साथी राजमणि ने निर्णय किया कि हम अपनी उस साथी को छुड़ाकर लायेंगे। दोनों ने हिजड़े का वेश धरकर अंग्रेजों के भोजन में नशे की गोली मिला दीं और अपनी साथी को लेकर भाग निकलीं। लेकिन भागते समय अंग्रेजों को पता लग गया और अंग्रेजो ने गोली चलाई तो पीछे आ रही राजमणि को पैर में गोली छूकर निकल गई। राजमणि के पैर से खून निकलने लगा। पर तीनों किसी तरह एक पेड़ पर चढ़ गईं और नीचे अंग्रेज सैनिक उन्हें ढूंढते रहे। ये तीनों भूखे-प्यासे तीन दिन पेड़ पर चढ़े रहे। बाद में अपने घर वापस आ गये।

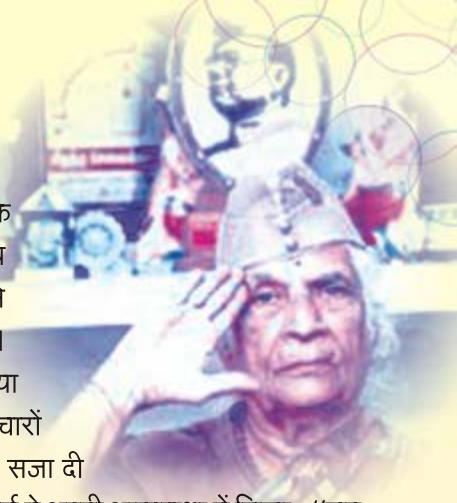

नीरा आर्य का विवाह अंग्रेज सरकार के सीआईडी अधिकारी श्रीकांत जयरंजन दास के साथ हुआ। बाद में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जान बचाने के लिये नीरा ने अपने पति श्रीकांत की हत्या कर दी। पति की हत्या करने पर इन पर मुकदमा चलाया गया और इन्हें काले पानी (अंडमान की एक जेल जहाँ पर चारों ओर पानी है और भयंकर यातनायें दी जातीं हैं।) की सजा दी गई। इस सजा में इन्हें भयंकर कष्ट दिये गये। नीरा आर्य ने अपनी आत्मकथा में लिखा - ''जब मुझे कोलकाता से पकड़कर अंडमान ले जाया गया, वहाँ पर और भी अपराधी महिलायें पहले से बन्द थीं। मुझे लोहे की सांकल से बांधा गया था। हमारे रहने के स्थान पर काली कोठरी थी। यहाँ पर सूर्य का प्रकाश भी नहीं आता था। हमें रात 10 बजे तक कम्बल, चटाई नहीं दी गई। जैसे - तैसे मैं जमीन पर लेट गई और नींद भी आ गई। लगभग 12 बजे एक पहरेदार दो कम्बल लेकर आया और बिना बोले मेरे ऊपर कम्बल फेंककर चला गया। बुरा तो लगा पर कम्बल को पाकर संतोष भी हुआ। मुझे बार - बार देश की आजादी की चिन्ता होती थी। सुबह होते ही मुझे खाने के लिये खिचड़ी दी गई। फिर सांकल काटने की लुहार भी आ गया। सांकल काटते समय उसने लापरवाही से मेरे हाथ और पैर की थोड़ी चमड़ी भी काट दी। मुझे बहुत दर्द हो रहा था तो मैंने उससे कहा - अंधा है क्या....? जो देखकर नहीं काट सकता। तो वह गुस्से से बोला - हम तेरे हाथ पैर तो क्या, तेरी छाती भी काट देंगे.... तू क्या कर लेगी? जेलर ने कहा कि यदि तुम बता दोगी कि नेताजी कहाँ हैं तो तुम्हें छोड़ दिया जायेगा तो मैंने कहा - नेताजी तो हवाई दुर्घटना में मारे गये, सब जानते हैं..। जेलर ने चिल्लाते हुये कहा - झूठ बोलती हो तो मैंने भी कहा- हाँ! झूठ बोल रही हूँ। नेताजी जिन्दा हैं और मेरे दिल में हैं। इतना सुनते ही जेलर का गुस्सा बढ़ गया और कहा - तो हम तुम्हारे दिल से भी नेताजी को निकाल देंगे। जेलर का इशारा पाकर लुहार एक बड़ी सी कैंची ले आया जिससे पेड़ों की पत्तियाँ काटीं जातीं थीं और मेरे स्तनों को कैंची से पकड़कर काटने लगा। मुझे नरक जैसी भयंकर वेदना होने लगी। दूसरी ओर जेलर ने पीछे से मेरी गर्दन दबाते हुये कहा - अगर दुबारा बहस की तो जान ले लूँगा। इतना कहकर उसने एक हथियार मेरी नाक पर मार दिया, जिसके कारण नाक से खून निकलने लगा। आज भी जब उस दर्द को याद करती हूँ तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं।'' कुछ समय बाद नीरा को जेल से छोड़ दिया गया। आजादी के बाद भी स्वाभिमानी नीरा ने सरकारी सहायता या पेंशन नहीं ली और फूल बेचकर अपना जीवन यापन किया। 1998 में हैदराबाद में नीरा आर्य की मृत्यु हो गई।

नमन है ऐसे देशभक्त को।

जन्मदिवस की शुभकामनायें

जन्म मरण के अंत की भावना में ही
जन्म दिन मनाने की सार्थकता है।

जैन धर्म उत्तम कुल पाया,
बोधि निज कल्याण करो।
जन्म मरण से रहित अजन्मी,
निज निधि में विश्राम करो।।

बोधि छाबड़ा,इंदौर
9 जनवरी

हो विरागमय स्वस्ति तेरी,
विश्व करे तेरा यशगान।
ईर्यामय जिनपथ अति मंगल,
अनय करो अब मुक्ति प्रयाण।।

अनय विराग जैन, जबलपुर
19 जनवरी

जन्म मरण का क्षय करो,
सुख भोगो प्रज्ञान।
आत्मराम की दृष्टि हो,
बनो स्वयं भगवान।।

प्रज्ञान जैन
11 फरवरी

परिणति होवे स्वाश्रया,
होवें मुक्ति गान।
स्वानुभूति से ही मिले,
स्वप्निल सा कल्याण।।

स्वाश्रया स्वप्निल शाह, पुणे
17 फरवरी

आतम अपना रुप है,
आतम अपना वेश ।
निज आतम को जानकर
पद पाओ सिद्धेश ।

सिद्धेश छाबड़ा, इंदौर
27 फरवरी

बोलते चित्र

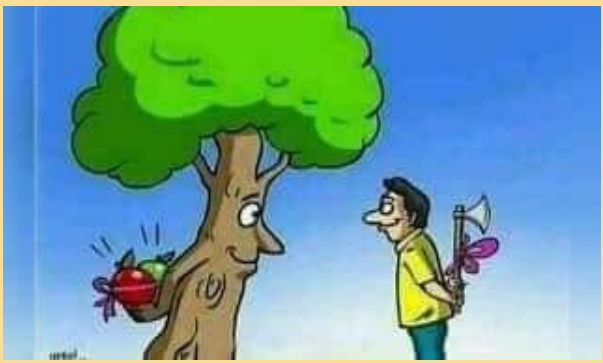

मंगल आमंत्रण | मंगल महोत्सव | अवश्य पधारिये

सिद्धक्षेत्र गोपाचल से सुशोभित नगरी ग्वालियर के अंचल तिघरा में
नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का
श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, ग्रेटर, ग्वालियर के तत्वावधान में आयोजित

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

बुधवार, 16 जनवरी 2019 से सोमवार, 21 जनवरी 2019 तक

स्थान : काशी नगरी, ग्वालियर

विशेष आकर्षण :

- नवीन जिनमंदिर की भव्य प्रतिष्ठा
- आत्मा से परमात्मा बनने की विधि का प्रत्यक्ष दर्शन
- देश के उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचनों का लाभ
- इंद्रसभा - राजसभा का भव्य प्रदर्शन
- जन्मकल्याणक के अवसर पर विशेष रत्नजड़ित भव्य पालना झूलन
- साधर्मी वात्सल्य मिलन

प्रतिष्ठाचार्य : यशस्वी प्रतिष्ठा शिरोमणि

बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री

निर्देशन : तीर्थधाम मंगलायतन

निर्देशक एवं मंच संचालक - पण्डित संजय जी शास्त्री, मंगलायतन सह-निर्देशक-पंडित सुबोध शास्त्री, शाहगढ़, श्री विराग शास्त्री, जबलपुर

आयोजक : श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, ग्वालियर म.प्र.

सम्पर्क : इस महामहोत्सव में आप सपरिवार पधारकर अध्यात्म की त्रिवेणी में स्नान करें साथ ही इन्द्र-इन्द्राणी, राजा-रानी, लौकान्तिक देव आदि पदों को स्वीकृत कर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

संपर्क सूत्र - मनोज जैन 9425120700, उत्तम जैन 9752210442, अजीत जैन 9826256121